बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)
Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह
(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 145 /2026) Year: 8th

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 1.1.2026

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	➢ फ्रांसबीनए पालकए मूलीए मेथीए गाजरए शलजमए चुकंदरए लहसुनए सब्जी मटरए बैगनए टमाटरए मिर्चए गोभी वर्गीय फसलों तथा आलू में आवश्यक उर्वरक प्रयोग कर निराई गुड़ाई करके यथा आवश्यक मिट्टी चढ़ा दें। ➢ बैगनए टमाटरए मिर्च व गोभी वर्गीय फसलों में नमी संरक्षण हेतु सुखी घास की पलवार प्रयोग करें। ➢ कुहरा एवं पाले से बचाव हेतु खेत में नमी बनाए रखें।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	**शस्य.प्रबंधन** ➢ जनवरी माह में ठण्ड का प्रकोप बहुत होता है, जिसके फलस्वरुप फसल नष्ट हो सकती है।फसलों को पाले से बचाने के लिये शाम के समय खेतों के आस–पास आग जलाकर धुआँ करना चाहिये, इससे तापमान नियंत्रित होता है तथा फसलें ठण्ड के प्रकोप से बच सकती है। ➢ गेंहू में सिचाई 25–30 दिनों के अन्तराल में निश्चित करें। इस समय सिंचाई अच्छी पैदावार के लिये अत्यंत आवश्यक है साथ ही जौ में भी सिंचाई अवश्य करें। ➢ आमतौर पर जनवरी माह में सरसों में फलियाँ बनने लगती है, अतः खेत में नमी बनाये रखनाअतिआवश्यक है। ➢ अन्य तिलहन एवं सभी दलहनी फसलों जैसे चना, मटर आदि में आवश्कतानुसार सिंचाई करें। ➢ समय–समय पर खरपतवार प्रबन्धन करें, इसके लिये हैंड हो की मदद ली जा सकती है। ➢ चनें में फूल पूर्व निपिंग(खुंटाई) का कार्य अवश्य ही पूर्ण कर लें। ➢ बरसीम, रिजका व जई की हर कटाई पर सिचाई अवश्य करें। **मृदा.प्रबंधन** ➢ अगर किसान भाईयों ने मृदा परीक्षण कराया है तो मृदा परीक्षण रिपोर्ट को कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों/अन्य कृषि विषेषज्ञों से समझ कर फसल में उसी अनुसार उर्वरकों का व्यवहार करें।

		➢ बागवानी फसलों में पौधे की उम्र एवं आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। सामान्यतः प्रति पौधा प्रति वर्ष उम्र के अनुसार 100 ग्राम एन0 पी0 के0 मिश्रण का प्रयोग करना चाहिए। ➢ सिंचित गेहूँ में नत्रजन के रूप में बची हुई यूरिया की आधी मात्रा का प्रयोग प्रथम सिंचाई उपरान्त करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवष्यकतानुसार पोषक तत्व प्रबन्धन करते रहे। ➢ रबी की तिलहनी, अनाज एवं दलहनी खडी फसलों में पोषक तत्वो की कमी के लक्षण दिखाई पडने पर जल घुलनषील उर्वरकों जैसे एनपीके (19:19:19), एनपीके (0:52:34) एवं एनपीके 0:0:60 आदि में किसी एक की आवष्यकतानुसार मात्रा 100 ग्राम प्रति पम्प की दर से (15 लीटर पानी) छिडकाव करना चाहिए।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	सर्दियों के मौसम में पशुओं पर कुप्रभाव न पड़े और उत्पादन न गिरे इसके लिए पशुपालकों को अपने पशुओं की देखभाल करना बहुत जरूरी है। पशुपालक, ठंड के मौसम में पशुपालन करते समय दुधारु पशुओं की देखभाल वैज्ञानिक विधि से करें तो ज्यादा लाभकारी होगा। ठंढ का मौसम पशुओं के शरीर पर विपरीत प्रभाव डालता है जिसकी वजह से पशु बीमार भी हो जाता है और दूध की मात्रा कम हो जाती है। ठंड के मौसम में पशुओं को कभी भी ठंडा व बासी चारा व दाना नहीं देना चाहिए क्योंकि इससे पशुओं को ठंड लग जाती है। पशुओं को ठंड से बचाव के लिए पशुओं को हरा चारा व सूखा चारा एक से तीन के अनुपात में मिलाकर खिलाना चाहिए। ठंड के मौसम में पशुपालन करते समय, पशुओं के आवास प्रबंधन पर विशेष ध्यान दें। पशुशाला के दरवाजे व खिड़कियों पर टाट–बोरे लगाकर सुरक्षित करें। जहां पशु विश्राम करते हैं वहां पुआल, भूसा, पेड़ों की सूखी पत्तिया, लकड़ी की छीलन इत्यादि बिछाना जरूरी है। ठंड में ठंडी हवा से बचाव के लिए पशुशाला के खिड़कियों, दरवाजे तथा अन्य खुली जगहों पर बोरी टांग दें। सर्दी के मौसम में पशुओं को संतुलित आहार देना चाहिए। सर्दी में पशुओं को सुबह नौ बजे से पहले और शाम को पांच बजे के बाद पशुशाला से बाहर न निकालें।
4–	**कीट-प्रबंधन**	➢ राई/सरसों में प्रारम्भिक अवस्था मे माँहू से प्रभावित फूलों, फलियों एवं शाखाओं को तोड़कर माँहू सहित नष्ट कर देना चाहिये। जैविक नियंत्रण एजाडिरैक्टिन (नीम ऑयल) 0.15 प्रतिशत ई0सी0 2.50 लीटर प्रति हे0 की दर से 600–700 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें। कीट के रासायनिक नियंत्रण हेतु फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 80 ग्राम को 200 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ चना/मटर/ मसूर में कटुआ कीट (कट वर्म) के जैविक नियंत्रण हेतु मेटाराइजियम एनिसोप्ली 2.5 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 लीटर पानी मे घोलकर सायंकाल छिड़काव करना चाहिये। फली बेधक के नियंत्रण हेतु फसल

		की नियमित निगरानी करते रहें 5 फेरोमोन ट्रैप प्रति हे0 की दर से खेत मे लगायें। आवश्यकतानुसार नीम गिरी 4 प्रतिशत अथवा एच0एन0पी0वी0 250 एल0इ0 250–300 मिली0 300–400 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से सायंकाल छिड़काव करके कीट का जैविक नियंत्रण करें। ➢ मटर में स्टेम फ्लाई (तने की मक्खी) के नियंत्रण हेतु क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 60 मिलीलीटर मात्रा को 200 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें । ➢ सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। ➢ बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए व क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 80 मिलीलीटर मात्रा को 200 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए। ➢ टमाटर में फल बेधक सूड़ी के नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत की 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 8–10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें। ➢ फूलगोभी, पत्तागोभी में डायमंड बैक मोथ की निगरानी हेतु फेरोमोन प्रपंच 3–4 / एकड़ लगायें व बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) 1.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिडकाव करना चाहिए। रस चूसने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 80 ग्राम को 200 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ आम में मिली बग कीट के नियंत्रण हेतु आम के तने के चारों ओर गहरी गुड़ाई करके मिथाइल पैराथियान 2 प्रतिशत चूर्ण की 200 ग्राम मात्रा प्रति पेड़ की दर से मिट्टी में मिला दें तथा मुख्य तने पर 400 गेज की पालीथीन की 25 से0मी0 चौड़ी पट्टी बांधे और पट्टी के ऊपरी तथा निचली सिरे पर ग्रीस लगाकर सील कर दें। यदि कीट पेड़ पर चढ़ गये हों तो फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम

		को 10 लीटर पानी में घोलकर प्रति पेड़ पानी में घोलकर छिड़काव 15 दिन के अन्तर पर 2–3 बार करें।
5.	**बागवानी. प्रबंधन**	**पाले से बचाव :–** ➢ जनवरी माह में भी दिसम्बर माह की तरह पाला पड़ने का खतरा रहता है। इसलिए पौधों को खासतौर पर छोटे पौधों को तथा नर्सरी को टाटियों, बोरियाँ तथा छप्पर से ढ़क दें। पाले वाली रात बाग में सिंचाई अवश्य करें। **कांट – छांट तथा छिड़काव :–** ➢ इस माह में अंगूर, नींबू प्रजातियाँ आडू तथा अनार में कांट–छांट अवश्य करें। नींबू प्रजातियों में सूखी तथा रोग ग्रस्त शाखाओं या टहनियों को अवश्य काटें। कांट–छांट के तुरन्त बाद एक से.मी. से मोटी टहनियों पर बोड्रेक्स पेन्ट का लेप करें तथा पूरे वृक्ष पर कॉपर आक्सीक्लोराइड 300 ग्राम/100 लीटर पानी में घोल बना कर छिडकाव करें। **खाद एवं उर्वरक :–** ➢ पौधों की उम्र तथा किस्म के अनुसार गोबर की खाद तथा उर्वरक दे। **नीबू वर्गीय फल :–** ➢ बागीचों की साफ–सफाई करें। ➢ रोगग्रस्त एवं सूखी टहनियों को अवश्य काटे। कटे भागों पर बोर्डेक्स पेस्ट लगा दें। इसके पश्चात 0.3 प्रतिशत कॉपर आक्सीक्लोराइड का घोल बनाकर छिड़काव करें। ➢ किन्नों जाति के फल इस माह के अन्त तक या 10 फरवरी तक तोड़ने चाहिए। फल के डण्ठल को फल से बहुत करीब से काटें। जूट की बोरियो या बांस की टोकरी की अपेक्षा गत्ते के डिब्बे या लकडी के बक्से से विपणन के लिए भेजे। फलो को दूर स्थान पर भेजने के लिए कार्टून सबसे उचित है। इसमें रखने से पहले हर फल पर कागज या टीशू पेपर (डाई फिनाईल से उपचारित) में लपेट कर पैंकिग में रखने से ज्यादा समय तक फफूंद या सड.ने से सुरक्षित रखा जा सकता है। किन्नों के फलों को सामान्य तापमान पर 50 से 55 दिन तक पॉलीथीन बैग (100 गेज) में पानी से धोने तथा कपड़े से साफ करने के पश्चात रखा जा सकता है। **आमः** ➢ थालों की गुड़ाई कर सिंचाई करें। ➢ पिछले माह यदि खाद और उर्वरक नहीं दिए है तो इस माह भी प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम या अधिक वर्षीय पौधों में क्रमशः 15, 30, 45, 60 व 75 किलो प्रति पेड़ गोबर की खाद के साथ साथ 250, 500, 750, 1000 व 1250 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट प्रति पेड़ थालों में दें। चौथे, पांचवें वर्ष या अधिक पुराने पेड़ों में क्रमशः 250 व 500 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश भी देना चाहिए। ➢ उर्वरक देने के पश्चात पौधों में सिंचाई भी करें। **बेर :** ➢ इस माह में बेर की सिंचाई अवश्य करें ➢ प्रथम पखवाडे में फल मक्खी एवं बालों वाली सुण्डी से भी रोकथाम के उपाय करें। ➢ कांट–छांट तथा खाद देने के तुरन्त बाद सिंचाई दें। **पपीताः** ➢ इसके पौधों में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई और सिंचाई करते रहे. इसके तनों के चारो तरफ मिट्टी चढाने के उपरांत ही सिचाई करें जिससे पानी तनों को ना छुए। ➢ गत माह यदि उर्वरक नहीं दिया है तो इस माह प्रति पौधा 30–40 ग्राम यूरिया,150–200 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा 50–75 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश

		प्रति पौधा थालों में देकर हल्की सिंचाई करें। तैयार फलों को तोड़कर विक्रय हेतु बाजार भेजें। **अनार एवं आंवलाः** ➢ इन फलों के बगीचों की साफ–सफाई, गुड़ाई और खाद देकर सिंचाई करें। तैयार फलों की तुड़ाई कर विक्रय हेतु बाजार भेजें। **अमरुदः** ➢ इसके थालों की निराई–गुड़ाई और समय समय पर सिंचाई करें। पके फलों की तुड़ाई कर विक्रय हेतु बाजार भेजें **अंगूर :** ➢ कांट–छांट का उपयुक्त समय जनवरी के मध्य से फरवरी के प्रथम सप्ताह का है। कांट–छांट के तुरन्त बाद कटे भाग पर बोर्ड्रक्स पेस्ट लगा लें पूरे बाग को कांट–छांट के उपरान्त 0.2 प्रतिशत बाविस्टीन का छिड़काव करें। **खाद एवं उर्वरक :–** कटाई छटाई के तुरन्त बाद खाद एवं उर्वरक दें। ➢ **प्रसारण :** अंगूर प्रसारण का अन्य तरीका करना विधि द्वारा ही है। एक वर्ष पुरानी शाखा से कलम तैयार करें। कलम लगभग 30 सेमी लम्बी तथा गहरी मोटाई की होनी चाहिए।
6.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ कृषि वानिकी प्रणाली के अंतर्गत रोपित इमारती लकड़ी की प्रजातियों जैसी सगवान, यूकेलिप्टस, अंजन, गम्हार, नीम, मालाबार नीम, कैजुअरिना की निचली शाखाओं को तेज आरी से काटें ताकि गाँठ मुक्त गुणवत्ता वाली लकड़ी प्राप्त हो और कृषि फसल पर छाया का प्रभाव कम किया जा सके। यह प्रक्रिया पेड़ों को तेज हवा के नुकसान से भी बचाता है। ➢ कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों के थालों की निराई गुड़ाई और सिंचाई करें । ➢ उच्च उत्तरजीविता दर सुनिचित करने हेतु सागौन और शीशम के एक साल पुराने पौघों की जड़ौल (रूट–शूट कटिंग) व स्टंप को पौधशाला में तैयार करें । इस कार्य हेतु पौध की मोटाई अंगूठे के बराबर (2. 5से0मी0), तने की लंबाई 1.5 से 2.5 से0मी0 तथा मूसला जड़ की लंबाई 15 से 20 से0मी0 रखें। अन्य जड़ों को सावधानीपूर्वक काट दे। तदोपरान्त, तैयार जड़ौल को पॉली बैग में रोपित करें। ➢ वानिकी पौधशाला को खरपतवार और रोग मुक्त रखें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय 6. डॉ मयंक दुबे	7. डॉ दिनेश गुप्ता 8. डॉ पंकज कुमार ओझा 9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह 10. डॉ जगन्नाथ पाठक 11. डॉ धर्मेन्द्र कुमार	